साहित्य में पानी

मुरली मनोहर सिंह

प्रकृति और साहित्य का रिश्ता बहुत गहरा है। या यूं कहें कि साहित्य की मूल प्रेरणा शक्ति प्रकृति ही है और प्रकृति की जीवन संजीदगी व ताजगी जल से है। इस प्रकार जल से सीधा और बहुत गहरा रिश्ता साहित्य का बनता है। तभी तो साहित्य और पानी के सहज स्वभाव को भांपते हुए सुमित्रानंदन पंत ने कहा है-

वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
उमड़कर नैनो से चुपचाप बही होगी कविता अनजान॥

कविकुलगुरु महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने भी मानव शक्ति की अदम्य जिजीविषा को व्यक्त करने के लिए किसी और प्रतीक को नहीं बल्कि 'पानी' को ही चुना जीवन की रवानी को प्रकट करने वाली विश्व प्रसिद्ध 'निझैर स्वप्नो भोंगो' कविता लिखी। साहित्य में पानी बहुअर्थी शब्द है इसके महत्व को प्रतिबिंबित करता यह दोहा स्मरणीय है-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानस चून॥

निश्चित रूप से बिना पानी के सब कुछ सूना हो जाता है। किस्से, कहानियां किद्वानतियाँ, गल्प आदि भी साहित्य का हिस्सा होते। पानी को लेकर भी लोक में तमाम किस्से मौजूद हैं। एक किस्सा यह भी है कि एक बार अकबर ने अपने दरबारियों से पूछा कि यदि बारह महीनों में से एक घटा दिया जाए तो कितना शेष बचेगा इस पर सभी दरबारियों ने कहा कि ग्यारह। लेकिन बीरबल ने बताया कि महाराज कुछ शेष नहीं बचेगा। दरबारी हैरान कि महाराज! यह कैसे? तब बीरबल ने बताया कि यदि बारह महीनों में से एक महीना सावन का निकाल दिया जाए तो कुछ शेष नहीं बचेगा अर्थात सूखा! हम सभी जानते हैं सावन अपनी वर्षा के लिए ही तो विख्यात है।

साहित्य में अभिधा और व्यंजना दोनों में ही पानी पर पर्याप्त मात्रा में लिखा और पढ़ा गया है। हिन्दी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। शास्त्री नित्य गोपाल कटारे की कविता है -

जल ही जीवन है
जल से हुआ सृष्टि का उद्भव जल ही प्रलय घन है।
जल पीकर जीते सब प्राणी जल ही जीवन है॥

बादल अमृत सा जल लाता
अपने घर आंगन बरसाता
करते नहीं संग्रहण उसका
तब बह-बह कर प्रलय मचाता
त्राहि-त्राहि करता-फिरता कितना मूरख मन है।
जल पीकर जीते सब प्राणी, जल ही जीवन।

रामेश्वर कंबोज की की कविता है -

पानी की महिमा धरती पर, है जिसने पहचानी।
उससे बढ़कर और नहीं इस दुनिया में ज्ञानी॥
जिसमें ताकत उससे उसके आगे भरते हैं सब पानी।
पानी उतर गया है जिसका, उसकी खत्म कहानी॥
लगा नहीं जिसमें पानी उपज ना वह दे पाता।
फसल सूखी माटी में मिलती, नहीं अन्न से नाता॥

इसी प्रकार जीवन दर्शन की भी बात पानी के माध्यम से ही की गई है -

जीवन है बुलबुला मात्र बस, संत कबीर बतलाते।
इस दुनिया में सदा निभाओ, प्रेम-नेम के नाते॥
नैनों के पानी से बढ़कर और न कोई मोती।
बिना प्यार का पानी पाए धरती धीरज खोती॥

प्रसिद्ध बाल कवि श्री प्रसाद के शब्दों में-

जाने कब से पानी है।
कितनी बड़ी कहानी है॥
कहीं वह है, बर्फ कहीं
पानी ही क्या भाप नहीं
सब रूपों में पानी है
ऐसा कहती नानी है।

प्रेम शंकर शुक्ला ने पानी के स्वभाव को बहुत ही मासूम तरीके से बयान किया है-

पानी बहता है
चाहे कहीं भी हो पानी
बह बह रहा है।
मेरे शब्दों! तुम्हारे भीतर भी तो
वह रहा है स्वर जल
नहीं तो कहता कैसे होता प्रांजल।
पानी बहता है तभी तक पानी पानी रहता है।

किसानी संवेदना के सशक्त हस्ताक्षर प्रसिद्ध प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल की जलभाव की अभिव्यक्ति देखिए -

अब आओ न पत्थर को निचोड़ कर निकाल लें
पानी
न अब मिलता है जल
न अब पूछती है प्यास
बस मोहन ही खड़ा है घर में नल
दमयंती के विरह में उदास
हाय रे यह हमारा अभाग्य
न अब मिलता है जल
न अब बुझती है प्यास
बस मौन खड़ा है धूप से भरा, भारी गरमागरम
स्वयं जलता और सब को जलाता, उदास दिन।
हाय रे हमारा अभाग्य॥
पानी पानी पानी, अमृतधारा सा पानी।
बिन पानी सब सूना-सूना, हर सुध का रस पानी।

आलोक धन्वा ने भी लिखा है-

पानी सिर्फ वही नहीं करता
जैसा उसे करने के लिए कहा जाता है
महज एक पौधा को सींचते हुए पानी
उसकी जरा सी जमीन के भीतर भी
किस तरह जाता है।
दुखी और टूटे हुए हृदय में
सिर्फ पानी की रात है
वही है आशा और वही है
दुनिया में फिर से लौट आने की अकेली राह।

नरेश सक्सेना तो और भी गहरे उतरते हैं-

बहते हुए पानी ने
पत्थरों पर निशान छोड़े हैं।
अजीब बात है, पत्थरों ने पानी पर
कोई निशान नहीं छोड़ा।

जाहिर है पानी की इसी खास खासियत के कारण ही तो कहा गया है-

पृथिव्या लीनि रत्नानि, जलमन्न सुभाषितम्
मूढै पाषाणखेड़ेषु रत्न संज्ञा वीधियते।

(पृथ्वी के तीन ही रत्न हैं, जल, अन्न और सुभाषित। मूर्ख जन पत्थर के टुकड़ों को रत्न कहते हैं।)

पानी से इसी लगाव को भांपकर ही तो कालिदास का भी मन मचला था और 'आषाढ़षस्य प्रथम दिवसे' के बहाने अपनी प्रसिद्ध कृति मेघदूत की रचना उन्होंने की थी।

इस प्रकार देखते हैं कि अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों को सहज करने में साहित्य में पानी का विशिष्ट स्थान है। तभी तो अनुपम मिश्र ने कहा है-

आज भी खरे हैं तालाब।

या केदारनाथ सिंह ने यूं ही नहीं कहा होगा-

इस नदी से ठंडी हवा आती तो होगी।। स्व

लघुकथा

एक और एक ग्यारह

इन्दु बारौठ'चारण'

आज सपना पूरा हो गया राधा का; साउथ केंजिगटन के इम्पिरियल कॉलेज में एडमिशन लेना ही तो सपना था उसका। खुशी के मारे चहक रही थी, खुशी तो आ गयी सूरज की रोशनी की भाँति परंतु चिंता के बादल अभी वहीं घूम रहे हैं। हॉस्टल का कमरा बहुत महँगा है और सब अलग-अलग लड़के लड़कियाँ हैं। घर से भी दूर। पिताजी तो इतना पैसा दे नहीं पायेंगे। इस कॉलेज में पढने के लिये कुछ तो करना ही पड़ेगा। एक साथ कई विचार मस्तिष्क में आने लगे कि पार्ट टाइम जॉब कर लूं। किसी को साथ रख लूं या हॉस्टल में न रहकर घर से आना-जाना कर लूं। समझ नहीं आ रहा था क्या करुँ। तभी माँ जो सदा ऐसी परेशानियों से हल निकालती है। कहते भी हैं ना कि माँ सहेली, एडवाइज़र, हर चीज का सोलुशन, सब कुछ होती हैं, की याद आई वैसे भी माँ सदा सर्फ का विज्ञापन देखती तो कहती सर्फ एक्सल है ना, वैसे ही कोई भी परेशानी आये डरना नहीं क्यों कि तुम्हारे पास माँ है ना। राधा ने तुरंत माँ के पास जाकर बात की माँ ने राधा को कहा कि अपने साथ किसी लड़की को शेयरिंग में रख ले जिससे पैसे आधे हो जाएंगे और कार्य करने की शक्ति दुगुनी हो जायेगी। अगर कोई प्रोजेक्ट भी मिलता है तो कम समय में मिल कर जल्दी पूरा भी कर सकती हो। हमेशा कम्पनी मिलती रहेगी। कोई होना भी चाहिये ना खुशी गम बांटने के लिये। बस फिर क्या था तुरंत ही हॉस्टल, कैंपस, कैंटीन सब जगह बोल दिया और आश्चर्य कि दो तीन दिन में ही राधा को एक यूरोपियन लड़की वसलका मिल गई। देरी ना करते हुये राधा और वसलका शिफ्ट हो गये। राधा गुनगुना रही थी- एक से भले दो....वसलका भी कॉफा खुश दिख रही थी, अपना सामान कमरे में लगाते हुये। सब कुछ होने के बाद राधा हॉस्टल की खिड़की के पास चाय पीते पीते सोच रही थी, ऐसे ही किसी ने नहीं कहा कि एक और एक ग्यारह होते हैं। उसका गूढ़ रहस्य आज समझ आ रहा था। स्व